थनैला

थनैला रोग क्या है ?

थनैला गाय के स्तनों के मुलायम ऊतकों की सूजन को कहते है। यह रोग अधिकतर जीवाणुओं द्वारा होता है। यह जीवाणु थन के छेद से प्रवेश पाकर स्तन ऊतकों में फैल जाते हैं।

थनैला मुख्यत : दो प्रकार का होता है :

- गाय से गाय में फैलने वाला (संसर्गीय)
- वातावरण से गाय में फैलने वाला (वातावरणीय)

गाय–से–गाय में फैलने वाला (जानने योग्य तथ्य)

- गाय से गाय में यह जीवाणु मुख्यतः दूषित दुग्ध के छीटों द्वारा, दोहन के समय दुध की धारा से दुहने वाले के हाथों से, दूहने की मशीन के कप द्वारा फैलता है। यह मुख्यतः स्टैफाइलोकोकस आँरियस से होता है।

वातावरण से गाय में फैलने वाला

- थनैला रोग पशुओं के आसपास के वातावरण में उपस्थित जीवाणु (जैसे कि मिट्टी मे, बिछावन में) से फैलता है। यह मुख्यता: बियाने के समय दुग्धावस्था के प्रारम्भ में ही फैलते है। इस प्रकार के थनैला का मुख्य कारक स्ट्रेप्टोकोकस यूबेरिस होता है। यह जीवाणु अति तीव्र थनैला कर सकते हैं।

लक्षणों के आधार पर थनैला रोग दो प्रकार का होता है।

- पहला, जब थनैला के लक्षण जैसे दूध का थक्का व बंदरंग होना, स्तन की सूजन और कड़ापन अपनी आँखों द्वारा पहचाना जाये तब यह रोग लाक्षणिक थनैला कहलाता है।

क्रं स.	रोग की अवस्था	गाय	स्तन	दूध
1	तीव्र लाक्षणिक थनैला	गंभीर रूप से बीमार, मृत्यु हो सकती है।	काला पड़ सकता है।	शुरूआत में सामान्य लेकिन शीघ्र ही असमान्य हो जाता है।
2	लाक्षणिक थनैला	बीमार हो भी सकती है अथवा नहीं	गर्म सूजा हुआ तथा दर्दीला	असामान्य, बदरंग, छिछड़े व खून के थक्के मिल सकते हैं।
3	साधारण थनैला	गाय सामान्य होती है।	हल्की सूजन व लालपन	असामान्य, छिछड़े व थक्के मिल सकते हैं।
4	दीर्घावधि थनैला	सामान्य	गाँठे मिल सकती है।	पनीला तथा अन्य साधारण परिवर्तन
5	अलाक्षणिक थनैला	सामान्य	सामान्य	दूध के संगठन में महत्वपूर्ण परिवर्तन, बदरंग

तीव्र गंभीर थनैला (काला स्तन दृष्टिगोचर है।)

पहचान

- रोगी गायों तथा संक्रमित स्तनों की शीघ्र पहचान समयानुकूल उपचार के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए सभी नयी गायों पर कैलीफोर्निया मैसटाइटिस (सीएमटी) परीक्षण किया जाना चाहिए।
- अलाक्षणिक थनैला ग्रसित गाय तथा उसका दूध सामान्य नजर आते है। परन्तु दूध में पाये जाने वाली कोशिकाएं सामान्य से अधिक हो जाती है। यदि इनकी संख्या दो लाख/एमएल से अधिक हो जाए तो यह असामान्य दूध होता है। सीएमटी गाय के पास किया जाने वाला एक आसान परीक्षण है जो गौ पालक अलाक्षणिक थनैला की तुरन्त जांच के लिए उपयोग कर सकते है।

सामग्री

- चार छोटी प्लेट वाला परीक्षण पैडल
- सीएमटी अभिक्रमक (इसकों 10 ग्राम सर्फ को 100 एमएल पानी में घोल कर घर में भी बनाया जा सकता है।

तरीका

1. प्रत्येक थन की प्रथम कुछ दूध की धारा छोड़ने के बाद एक–एक पैडल में अलग–अलग थन की कुछ धारा ले लें तथा उसमें समान अनुपात में सीएमटी अभिक्रमक मिलाएं।

2. इन दोनों को खूब हिलाकर मिलाएं।

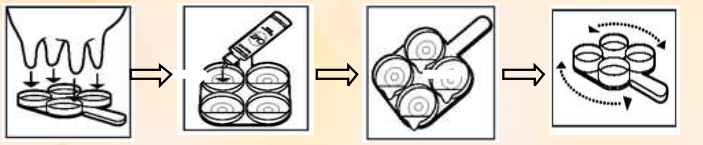

दूध की धारा → अधिक दूध फेंक दें → सीएमटी अभिक्रमक → पैडल को हिलाए मिलाए

संक्रमित थन का दूध जैली जैसा थक्का हो जाएगा

3. जो थन संक्रमित होगा उसका दूध 30 सेकेण्ड में जैली जैसा थक्का हो जाएगा जिसका कड़ापन दूध की कोशिकाओं की संख्या पर निर्भर करेगा।

उपचार

गौ–पालक स्वयं थनैला रोग का उपचार नहीं कर सकते। उनका कोई भी उपचार आरंभ करने से पूर्व पशु चिकित्सक की सलाह से निम्न दो प्रश्नों का समाधान किया जाना चाहिए।

थनैला रोग ग्रसित स्तन

1. संक्रमण की तीव्रता क्या है।
2. क्या उसका उपचार तुरन्त किया जाना चाहिए। अथवा वह गाय के सूखने तक टाला जा सकता है
3. क्या वास्तव में यह कोई नया संक्रमण है अथवा रोगी गाय को पहले भी उपचरित किया जा चुका है।

रोकथाम

1. साधारतयः यह माना जाता है कि रोकथाम सफल उपचार से बेहतर है।
2. थनैला रोग की रोकथाम के तीन आधारभूत सिद्धान्त है। थनाग्र के आसपास कारक जीवाणुओं की संख्या कम करना, थनों में जीवाणुओं के प्रसार को कम करना।

सूखी अवस्था में गाय के थनों का उपचार व संक्रमण की रोकथाम

इसके लिए निम्नलिखित उपाय काम में लिए जा सकते है।

1. दूहने से पहले व बाद में थनाग्रों का निसंक्रमण, जिससे लगभग 50 प्रतिशत वातावरणीय जीवाणु कम हो जाते है।
2. सूखी गाय में जीवाणुरोधी औषधि के उपयोग से थनैला की सफल रोकथाम की जा सकती है।
3. यदि दुहने की मशीन का उपयोग हो तो उसकी साफ सफाई व विसंक्रमण अत्यन्त आवश्यक है।
4. जिन गायों का उपचार सफल न हो उन्हें अलग रखना चाहिए।
5. गौशाला में पशुओं की संख्या चाहे जितनी भी हो, थनैला प्रत्येक गाय की पृथक समस्या है। अतः इसका समाधान पृथक तरीके से होता है।
6. इस व्याधि के रोकथाम व उपचार की समुचति योजना बनाने के लिए प्रत्येक गौ– पालक को इसकी जानकारी आवश्यक है।

याद रखें

- रोकथाम, उपचार से बेहतर है।
- दोहन के पश्चात थन विःसंक्रमण, तथा गायों का सूखी अवस्था में उचित उपचार थनैला रोकथाम के सर्वाधिक प्रभावी उपाय है।
- थनैला रोग की गायों की पहचान शीघ्र कर लेनी चाहिए।
- पशु चिकित्सक की सलाह से थनैला ग्रसित गायों का उपाय किया जाना चाहिए।
- संक्रमित एवं उपचरित गायों एवं स्तनों का संपूर्ण लेखा जोखा रखना आवश्यक है।

लेखक :

डा0 त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक), समविश्वविद्यालय
डा0 अखिलेश कुमार, वैज्ञानिक, औषधि विभाग
डा0 रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक
डा0 अशोक कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, जैविक मानकीकरण विभाग

भाकृअनुप ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

IVRI

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ
भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.

Printed by : ADIL-E-OFFICE MOB.: +91- 8395804304